Daily Gospel Reflections in Hindi

04 July 2019

मारकूस 7:24-30

FAITH OF THE SYRO-PHOENICIAN WOMAN

एक कानानी स्त्री जो जन्म से सूरुफिनीकी थी, अपनी लड़की के स्वास्थ लाभ के लिए प्रभु से विनती करती है। यहूदी जनता अपने आप को ईश्वर की चुनी हुई प्रजा मानती थी और अन्य सारे गैर–यहूदियों को श्रापित और उन से कोई वास्ता भी नहीं रखती थी। संत मत्ती, इसी घटना का उल्लेख करते हुए लिखते है कि शिष्य येसु के पास आकर उस स्त्री को उन से दूर भगाने का आग्रह करते है (Mt. 15:23) और तो और ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु भी उसकी मदद नहीं करना चाहता हो, उसे और उसके वंश को नीचा दिखाता हो। लेकिन वह अपने आग्रह पर अडिग रहती है और अंततः उसकी लड़की को स्वास्थ्य लाभ मिलता है। प्रभु ने भ्रष्ट न्यायाधीश और विधवा के दृष्टांत द्वारा यही संदेश देते है – नित्य प्रार्थना करनी चाहिए, कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। उस कानानी स्त्री के सामने कई बाधाएं थी। उसे अपने धर्म के नहीं, बल्कि यहूदियों के मसीह के पास जाना पड़ा और उस मसीह के शिष्य यह नहीं चाहते थे कि वह प्रभु के पास पहुंचे। और सबसे कठिन बाधा – मसीह स्वयं उसकी मदद नहीं करना चाहता हो। उसने इन सबका सामना विश्वास और दृढ़ता से किया और उसकी इच्छापूर्ति हुई। वह स्त्री हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019